

हिंदी ग्रंथ



Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

235
 वाईप्रलर्कोदूजाहनेषासः जवासननी
 तरमेहकरनिर्नानेगीपास अ पित
 सी ७ ई पिप्पलांरासलोचननीस
 पाल दुगाणईनतैवासाउल प्रुठिला
 ईचीमुधकुहारा टंकसमेहोएभीवास
 करीयोफकीचटएजोगी माखोसेती
 दीजोनेगी ईरूपीछासीपितकीओर
 काहूपित इतवेहतीपंडितेजेरुगीन
 टेनित अ श्रेष्ठा स उ ई गंधक

सेतीतां वामने। ईश्वरी त्रिगुण त्रिक
 दातृने। पीठमा च्छो सेती गोवे। तिनति
 नरती गोली लेठे। दोदो दीजो कारण नोगी
 तिनति नदीजो कारण नोगी। ईश्वरी चा
 सी जन्म की श्रेष्ठ प्रदे। स्ववास। इतने हर्ष
 पंडितो जो को गोली ध्यास। अ क स्था
 का पा : फलि घत रे उग्रा ठहि आने
 तिसके भीतर लूण मिलावे। वानो वानी
 ऐक जलावे। अंतन तिसके लूण मिलावे॥

सातवसुसों लसले घने । मधनकपाणि
 चलने । प्रचकुलकुमपिष्पलामूल
 मर्कटपुष्पकरकरासजीकूल । छानलोह
 कीलेलेपूत । समकरसजहूपीपलसीत ॥
 दो । नानयमकाथलुकरगोलीन
 रीपोभास । इहतीसकलीवाईनौंछ
 सीउरम्भास । न । नो । सुनरेनै
 दवैदकेवचक्षण । दपीरोगकेपंचोत
 दण । हर्षजनसेतीषासीहोवे हृदय

चदेहाबोवे मिसननो जनघोटा मने
हेतु कने न सधाटा चणे सोनाले भिगी कव
नागे समकल इके पीप ह्याने बांधे
पुजी आनती तोह देहे ही जो साधत मे लु
इसी हकी दाई रोगा बांधी रो र सास
जे मागी न दे जे जना वकरी दूधे भासः
जांदाई रोग कावलु घरे अरु पिठन सके
हुठ तिस रोगी की जानी यो जो रे जीतन
हुठि विष्णु लं वास लोचन का पूर दुग्न

इस ते लो हु म न र स म क र सि ला जी त न ल
 री क री ई क ठ व र्ण क र वे मा त्रा दी जे
 भा व्वा से ती इ नो जै सी वा ई पे ती ई स्था
 ह ती द ई रोग म द्र व्वा प्र मे ह उो ष ध तु
 ल न म स के दं टो प म ह रे य अ पि अ स
 का वै द लि वि ज्ञ क र निर्वा न चे प्र क
 र का है अ ती सा न कि स हं पे ती कि स हं वा
 ई कि स हं र क र द ते ज ई आ दि ने व
 ते व र्त क र वे य वि पा च द प प्प प ल खे

पाचे औषद बंधु कदीलो। कुडा जवां साध
 नीयां विल दी जो ~~पुन~~ कर्तियो। टिह
 दे। रा। स्थिती हती पित्त रोग प्रति दी जो
 परवाई जो दी जो ~~पुन~~ परवाई ने। तो दी जो
 सुंठिरलाई जे पुन जाने रोग का प्रसाम
 ने जाने पथ। सुन रे वे दमूर्ध वे द के संज
 लठ हो ह्य। पुन। धारि पो ल धनी पार
 लो ल म कर खंडुर लावे। नाल यी सो पप
 रवी न ~~पुन~~ लावे। चावल दान क बंधु म पि

लावे। ईस्थीरती अतीसार कयापित कया
 चाई जेजे दुपयाने पय कातौ संग्रहिणी
 जीजाई पुनः दीजे पोसाखंडुन सपाहु
 मनी नचावे नोगी मंगलः पुनः दीजे पो
 सा भोजन सुखंडु अती सखदौ पावे बंधः
 पुनः दीजे पोसाखंडु कुकुरा अती सार
 कर ठाने हासा तीनों दीजे साघसुम
 त दीजे पोनी संग पयन दीजे पुपनेजे
 लेई ननोगी मंगलः पुनः सुठिन रूपाक्षपे

१३

सत उग्रना नदा एंग चल जवाय ए हिंगुनु
 नपांणी मटेमिच चूर्ण वल एंग शूल वाई
 अतीसान जाई वेदादिषत्रा कर निनी
 गुल्मपांच संघुहिं चाना जलवत्री मु
 प्रापुहक अनार सुठिकुष्टि माई जों धा
 न समनरन सप्रहं गिजवापावे पीस सा
 व्योसा चनलावे मात्रा घाघे संग धल
 वे लागे मुखतां घां हपिलावे दो रा
 हंरता संग्रहणी चारको जे संत पधं

नतदेह जेदनजानेदेनकातो। औषधकह
 कने पुनः त्रिगुणमिफलापुहकनमूल। ची
 ताचवकजवायनरुसमूल देतातोलीजोदे
 दोतोह म्रधरागुडसेधरीयोघोह मात्र
 मेहोकीनरघोह जुगरोघोडेघवेराह ल
 हनजुकेनाबडुठाके पाघेमदकीजाउचु
 याके जेसदिनमात्रा औषधदेहो हतीसं
 गृहिणीरूपकोरेहो दो रा हतीषास्त्री
 नोगकीं सासमनुषमनुमूल डेरनीहती

१४

बहुदोगको औषध का पहिल मूल ऐहकम
 के नाम ऐहकम मूलम हौहो प्रानेद संग
 एंगीको सावे वेद ईन दधं की जटको म्र
 व समकर धाल की कर की ज्ञान् धालि
 म्रं व संजा लनेन युग लकटायी टहली चे
 न चावल डेर सुहे जन धाल पतिलनी
 मेलम लवटेनाल म्र वा गो का पाई॥
 पहिलानो गी का उकरावो पाछे औषध
 तिसे धालावो चवक जउगी दनी पांजीना॥

जीवलकनावे। पाछेछौछाधतिसेबहा
 वे। पीपलसुठिनिउंगीनर्क। तगरमुस्त
 नरकेसरप्रर्क। बांधेपुडीकपउधंए
 देतोदीजेरोगपछान। इत्येहर्तास्वान
 मनुष्यंभी। कहीमोहमतिजंनोहासी। उ
 रनीहर्तावहतमोगजोदीजोमाध्यासाय॥
 पाछेपथप्रपथकीजोकनीयोवैदसं १७
 जाल। म कि नो का क्रिमरोगकी
 मुनो कहानी। रैनमोवैमुखप्रावेपानी॥

जागति जिह्वा अघ्न सुकवे चेटे हिरदा
अनुष्ण गंधैः आननं वीलापे टचल
नो षटीक्षा सैः संगपि हविः दो रा
हर्ता सकले नो गंधैः एतौ षट्समनसि य
उषदं गंधाकपाने जे वै दन होवे बुझा
पुनः आनविउंग पिसाबो निका गज
के स्रउर मुनका माषो सैली वांछे
गाली दो दो टंके होने तोली ईक ई
क गाली नित्य प्रवावे कि मरोग की

जउठिठजावे पुनः मुद्रासंघुअनुधिलु
 म्रनार एजीजने किमकुठार अमम
 वे का म्रपनेपुकासुनेपुमान कहि
 तमनेसी लोकम्रजेन किमहंकमकि
 सहजाक किमहंगुदासैजावेपाक कि
 सहम्रसहेषम्रकिमहवाई किमहंरक्रग
 दातैजाई त्वारचकितसाजंनअनूप
 कयणवेधनउेखछछूप छणी से
 ताप्पाजुतुचागजजंग इमतीनोंकै

१८

कृष्णसंग को ले लेये मरुत न आवे ॥
 उपर नोगी को वै ठावे ॥ जब बहुत धूपा
 इसका जाई वकी पुखै ठावे जाई ॥
 पर नोगी को वै ठाई ॥ अरु नोगी का कर्ता
 नसा ॥ जब बहुत धूपा गुद भै जाया ॥
 पहिल नोगी ले वै ठावे ॥ पग उपर सिर
 हेठ रकरावे ॥ पाछे रूंभी गुद भै लावे ॥
 जब आवे वाहर तातु त कटवे दोरा
 कटिन की विधि कहि जो को उजाने ने दु ॥

पाछे ईस कर्म के नो गतिके न छेद के
 उनु वकी जमे नुष्ठा जो की कर हो ई
 निगरे ईदुषः पछे लखन नु जुषा वे मि व
 ता पुटि मंगा वो पुष्प ने छेता दछे क
 पडे छे ले सी लावे मे लो चागे ल क वं धा
 वे गुन ईस्का देव प्रायतावे अति उचु
 के अर्म सुकावे पुनः गाव मूत्र मै ह्रुति
 पकावे जब हो ई घु घनी या घं ई सु
 कावे पाछे दुग्ग मूर्ण ही जो मेति

१५

ईकठानिकाकीजो गेहरीगोटकेसाथ
बधाने। मात्राघातेसंगविहावे। दो
ह्रा। हर्तपुहोअसमिकोवाइकोमतिदी
जोउपरपिततर। पितरुपरदीजीसी। इ
तहडोषघनिस। अ। वि। च। रोगक॥
होईअपचीसमजनखोवै। तिसके
रोगविश्वकाधावै। लघनकहं
विश्वकनाहै। जोवैदविद्यामोसमं
है। जमानाएकहीयेनं। प्रतीसार

होता होता घटि विचार आदोषमें व
 न कराने के लिये जो जानिये पिलाने पा
 छे जै फलिसाधु सो देखे हूँ तब प्रच ई
 सकौ एहे जै प्रलियुं ही मे हूँ मंडी ते
 ले से ती मली के लिं डी इ स्थी नर पर
 जाइ विस्वची राखो छा मना सीत सर
 ची अ प्र हका वचन धनंत यति छे
 वषां न वी स ज्ञात का प्रमे ह्य धं न
 कि स हं प्रो ण कि स हं वाई कि स हं ध

२.

तपितसौं जाई जिसको वैद्वनको छिक्वा
वे त्रिफला हलदी मोघजड वार दुग्ग
इस्के घनी आठवा माष्ये सेती कनी
योगोली हेवे जैसा फलु हर नोली
किस हू पोरी किस हू सानी दी जी गो हू
कनी यो कानी इह रती सकल प्रभे हि
कोई समै ना ही फेरु लिषिनें वाला क
करे जो हि दे होई अंधे पुनः त्रिफ
ला मिला जीत ज वासा सम कर ईन

केह जे वांसा कुटिछाए कनिफकीक
 सीयो जीतर के घेवासन घरीयो मात्र
 दी जे पांती संग हर्षि वेग सुख प्रानं
 द अंग हर्ष मधु पर मेव के जिस पर म
 बीजात हकी म दुर्वे शक्य कने जु वै दन
 बूजे वात पुनः अन्न का घनीयां महिदी
 जीवा सिला रात्रा म लेखी जकतीना
 आधु आधु मिरसा ही कनीयो कोरे
 वासन जीतर घरीयो पोस्त मिं बलते

२५

बेसाय दोदोसिनसाहीबंडभिला
वो सायफनूं पानतिसेबलावे। प्र
मेहसुपेदाहाहसुपीत ईरपीहर्त
सुनरेमीत म्र द त के कोउपाई
जवअंगदिलीघनंतरपुछे। डौषध
लिषयामूत्ररुछे। खीरेबीजदनीअं
जर्बुवार दुग्नाईसपीकेसुगलामे
हईकठाफकीकीजे। सात्राघाचेर
गेदीजे। ईसपीसिस्वरजाईदवूत।

कहो मोहमन करीयो पूता। उरनी
 लीं वहुनोग कुकन पधरी रेतु देव
 हंकी मक्या करै वै दहोई सुवेत। अ
 मू रे का गोधन नोखा ह्म उअंन
 पाषाण ने दकनीया लनी जंन। कापु
 जुपीये स हिल मिलाई मन्त्रोद्य चिंन
 माली जाई अथ स्या कका। राख जवा
 सा जल मैने वे। जव होई निपंगता तव
 नौगी कौंदेये। समक नई संधी मिश्री
 पावे। सजावै लफी जटा कटावे। अ

२२

प प ने का जिसमाममकौपचनी
होवे मृतकतंतासिमरनेवे मलमल
पेउमृतनिकाहे मृतप्रीतरमोतनूला
हे जोषारुहुहगाकलंसीशोदा कर
देपचनीजोनालोरा जिसपचनीतोव
हुदुषुदीया हुमरोगंधीमृतकथीपा
तीछेनतिकेवहतकरवि पानीकुहसेसं
गपिलावे पचरीकाईहकर्तानासु॥
जातिनिशेगीवहतेषास दुर्वशाहकी
मजोवधममरुपे ईस्यीरहेतचीरदि

कहले ॥ श्री वी विद्य चीरोपचनी ॥
 रक्षार हा ॥ उपमनससवहार ॥ निने
 सतनटके ॥ असीये ॥ पाछे टिकी निम
 की धनीये ॥ तिसपाछे मह भलोवे ॥ च
 ले प्रजने गगनो ॥ इसचे रत्नो देण ॥
 पथनी कर्तानाम ॥ पथपा पथप पथनी
 डोजे ॥ जीव न लो ॥ जे ॥ अथ ॥ डी ॥ ॥ ॥
 शोरानें वदणी रे बीज ॥ समकर समह
 मिश्री लीज ॥ मैदा कर सिलु वटे साथ ॥

चंशऐंगकपउधरकरहाय चपरहियावे
 जितनबूज सनकुचहुसकेहुपनपूर
 चारपहिनकीषावेत्रेह मर्वहुसके
 मंदनमेहु जोकेहुषावेइतनबूज॥
 जमदेमदेहोवेचरपूज जोकोषावेइ
 सेनिहिए इहउषधकहियेइडीज
 उ इरपीहर्तबहुतनोगपयनीमरि
 परमेह हकीमदेवप्राक्पाक्तेजो
 वेदनजानेजेदु॥ म चहपुलका

हृष्याकप्रनालेघरस्रागे गोकेडुधक्कि
बाधपकागे। सपेहृष्यनरहेकप्रना॥
गाजरनीजलीजीयोपूरा। तिसकेसामक
रधंडुमिलागे। धूपनधसीये छाईसुका
गे। अर्द्धलिंगमरुविंदुकुशाद दोहफते
केजवेवाद स ते का। लौंगलाईची
जाफहिलेह दाहचीनीजहवत्रीदेह॥ १
नेउवालाससकरउहा सनकरोईक
ठांअधकनाल टंकवरोवरफकीकरवारे॥

पाचेमधुनेकाठपिहावे ईस्थीहर्ताचतु
 तनोगयेहडौषधपत्रसिध हंसीभदर्वेश
 क्याकमेजुवैदनहोवेबुझा ॐ स स
 बोलका ॥ रातदिनांमेवहुतामृत ॥ सह
 सलकहीयोईसकोपूत जोकोषावेई
 सेनहार सहसहबोलनहोवेवारः
 तिलगुडगीनीविदाम औषदसहस
 लिईस्कानाम ॐ न रो का भूध
 विनोगवधावेपापे भूषघटाईऊठावे

तापे पहिलानोगकनावेवोनः जेजन
 पावेबाहुहोनः नकसिंकनीनौउका
 मैलकनावेः मर्चनेमीघावे ई
 हर्तावहुदोगकेपूछकर्मनांमः चंगा
 हावेईसमपीजेदिनबहुवेवाई अथ
 आ रे का आरुनोगकामुनेंमुजाई॥
 निताहंपेतीकिसहवाई प्रसवेआडव
 घावेआउ आडवचाईघटावेहिंगा
 पाछेईमकेलेहकरावे पय्यापय्य

समरुपुहावे पुनः कीडाहा कमको
 उकहे जंघहिमभेनेन कहे अ
 मां का बधिमानके लुनहे लुदण
 कहित कदे मरसे वच च ए वाहरसे
 तमरुमंत्रत वरमो पलपं हस्ते म्रध
 रिमरुमना पाछन देकर जं उकर
 वे पाछे ईस्ये कीर पिलावे जिसके
 नीतर जावे पानी नाम जलोदन ति
 स्का जं नी घे दे हुदु निरुलो नीम ॥

औषध ईस्का सुन होनी। सफे दम
 जे होई सफे दम ही जे प्यो। मा प्यो से
 ती करीयो मोम। पक्षे समजके पक्ष
 बुलावै। जो वरग घन अंग हगावै। अ
 अं न का। दर्द शरहंकी प्रवर्षावै
 वात। लक्ष्मण सुनीयो पक्षाघात। गुंरी
 न सना वात न जावै। दूजा दंगा डी नुजं
 सुकावै। देते औषध दिल्ह न करीयो।
 तित्र चार दिन पहिला जरीयो। लप्पुन

१५

अंठिपुष्करमूति देवदान्मज्जमेदायस्व
 मूति जेकोईस्काकाटापीवे सर्ववाई
 सीचंगापीवे दयामूलकान शालप
 ईअनुजषुजयुमकदाईमात्र अक
 रिक्काअनुचितदापीपहमूलपचान
 एस्समईअनुमुप्रालेकचदावरलेहु
 ऐलडोवधदत्तमूलकाअर्धमंगपरि
 देलअ वा का गुडलसुनकेसाध
 मिलाने पोडीपुंठीमेहकुटावे।

नाईदोगयहिकर्तानास जगदिनदोग
 बहुतेधास। अ. फि. सा. वा. का. उन्म.
 दिवाईकालचणुऐसा. दोगीनेहैजेस
 तैसा। कबहूनेनेकबहूभावे। कबहूलेटे
 कबहूतावे। कबहूभूषाकबहूदंभ। प
 लयलजाविसुकुदीरसना। चढेचढ
 परचोटचलावे। कबहूलसकरहोकि
 नगवे। कबहूवैलेकबहूचागे। कबहू
 मोनेकबहूजागे। उक्तिनिकालरनेच

२८

नकनीये॥ ओषधधीदिनयेडेजरीये
रूपगहाये॥ अकनप्रकनें चोवे॥ सिंहके
गीचंगाहोवे॥ विपलपुलकचिष्टुहोवे
येहोषधसममेहोचवि॥ सुखजि
मोदागलजवायए॥ मूर्नेतिलजिला
वेकनीये॥ चूर्ण॥ मात्रालेपरनातवि
हावे॥ उन्मादरोगकीजडाकडावे॥
अंजनकस्तुगर्भनसवार॥ पंडितजान
सिईनकीसार॥ जानीदेहीबहुतिवि

कारी यंत्री मंत्री कारी सो कारी दो र
 दुर्गेशाहकी मविषु नमने सिप्राने
 लोक जेको पुरे प्राण सुषर्ण पंडित
 होगु ईक पुरे ईक मम कना हिषनो
 मदीयो सुडा तेही पंडित मानी येस म
 जेवाचे वुडा दुहि नैन ते ईक हो ईहो ते
 दोनो नार ऐसे पंडित देवीये के ते कि
 जे संसार म ना का पाई लसु
 न संठी पुरे मरुलि मगंध जगय

२६

एकीपलमूल। समकरसमहंगुलि
लीजे। मेहईकठानिकाकीजे। चदूनीतर
मेहकुटावे। बाधिनेजनसमजपुल
वे। दो। रा। रेहहतीवाइरोगअरुगंध
वाईसत्रिपात। डेरनीहतीजानीयेमु
खनंगअरुपदाघातु। अ। ते। वा। क।
सुंठी। लसुनपीपलमूल। सोरे। कोईफ
लुअंकाफल। दो। दो। दो। ले। रे। सनलीजे।
मेहईकठानिकाकीजे। दसूएपां

एमिनि सायचडावे। अघाईनेतेलमं
 ने। ठाहकडाहिएमकावे। पानीध
 रेतातेलकडावे। सीतलहेईतांकप
 पावे। वाईरौगकेअंगमहावा। दुर्वश
 हकीमचधानेऐसा। मूर्खवैदतुजेवद
 केसा। अ म स का जबमुखनंगरि
 उपज्रावे। माहपकेवउपकाईषवावे।
 मासपरेवत्रिपयषुहावे। निसदिनि
 दर्पएहेदिषहावे। बाहतीतैलजुमु

३०

वेमलावे॥ त्रिकुटाजाफलदांतचवं॥
 वे॥ कहितलंकिमामुनेपंडुतं॥ नचेरै
 दपें॥ डौषमधेठुस॥ ॐ॥ वाई॥ ॐ॥
 मवाईजबहिंगी॥ अने॥ गुदे॥ अरुजंघसं
 धउषावे॥ पाछेपानऐनडुकेतेहु॥ इध
 केसंगदीजे॥ वहिमेंल॥ पाछेहप्पुनदी
 नखलाने॥ जोटमिठापघचढावे॥
 अथवा॥ का॥ लु॥ अर्कधतरामुंठिह
 फीम॥ ऐनडुकटाईकेहलंकीम॥ डौनकु

ठहर भल मेहु आघ ईस्थी कचू कातेलु
 सम कर सज हं मं नें कीजे मेह ईक प
 निका कीजे अलफ मही ईसे पकावे
 सो तेव ले अंग भल के दुर्ने शाह की मयहि
 बुद्धि सुनाई मरते तं ता कनी यो लाई
 दे। २॥ जे ला गंडी आपी उवाई सी च
 ए सक ले जाई तव हर्ता चौना सी उज
 वयहि अंग भलाई ॥ ३ ॥ आ दे का
 वर्च कचूर अज मोद विधाना लखन सं

३५

ठिते देव छुदाया जीनाचव कजवाई एनी
ता सकहे समधर हा जोमीता बूणिगु
उके साथ मिहलीश माजापानी संग बु
हगने दो रा इस्थी हती आमरोग
नको साथ छपद्रव जान ऐहो उ विज मै दे
तज सोदा कांन्ह अ कु को का जव
नक्रविकारी होवे देहा ठोहो घफ डर
देहा अवणी को जपकावे अंगे छुमने
गीची सल दो संगे रक्तनिकाह वि

चनकरीये ॐ षडची दिनने तेलरी
 ये तेलसो नुछि पुजे दीजे वेसने
 टीजे जलनरीये ईश्वरी कृष्ण पुनारनि
 जाई जादि नरोगी चाली वई पुनः
 नमः श्रीर केसरी सपाल चारो कीं लक
 टिहुवाल जेको डुपी बेरे हवा पु ईस
 नोगयी राखो नाथ किरसम्रं ववेरनि
 मके टाल इन चारों कीं चाला दुग्रा
 लेसर पंधु मित्रा के चट्टी तर मेलकु

३३३
 लं

टावे॥ कने कुआ च सुखवोगी दीछो
 वैदा अंदर शोकाहीले॥ इच्छी हतीर
 कदे॥ मजे को दुखाने नई॥ न त्तमात का
 पाह कुव वं व ह दुव ह नई॥ अय मेत दा
 मक॥ अव देह अंदर होवे लाग॥ तिस भा
 न सको॥ मे ते दाग॥ पह पहि रोग व घाव
 होव घाना होवे॥ सुन सुन वाता नोगी नो
 वे॥ न त्तनिका ह विने चन कनी डो॥ डोष
 धयी दिन चो डे जनी डो॥ डोच र पो कुन

दीजेवांए लेहुसुहागातेकचलेसु
सज्जीफयकउतेसंजमहसु। इनसज
नोंकातेहुनिमहसु। पावेमधुनीजेम
पकावे। ईनदिनाईकचारीजावे। उ
चरथोकनरोगगिषावे। दुर्वेशहकीम
पहिआदसुनावे। इस्तेनोगपुरातनज
वे। अथिं नो का जिसमानमकौ
होवेछीप। मूलीबीजकनीजोहीप
छायेसंगपीसपकावे। रंचकसुहागा

सायमिलावे इन्धीयिंमापुतातन
जावे डे दिनमहलतुनातीन्हावे चदन
सायचोकोहेहली इसमोगंधीरायेक
ता। प्र पाई जिसमानसकौंहावेपहि
परेबिरसतीताकोनाउ डोसनके
पुपासबठावे नेछनउसकेसायन
षावे तारेभीरेतेहुमंगावे मनचिह
स्वतीलेबंघावे जवचोउधूंआजलि
मैपावे तौलेउसकौंअंगमहावे

इसी पाउं पुरातन जाई जादि न जोगी
 ह्येहं व पुन बोध गंधक टंक रिक
 पात्रा पाव जेहं मन्त्र न जोगी हीनो
 झलक गहीत ह्येहं तांते पग पद हीनो ॥
 इसी पाउं पुरातन जाई जेहं मन्त्र न
 मजो बुझ न जाई म स फो का
 जेहं मन्त्र न पकाया ह्येहं दंतो चषे
 कनक चमेरे योडा जे सात एमि
 लावे सात दिन ईक चारी लावे जेको

३५

ताग्रामकचीलावे ऐनीकच्चावर्मप
कावे जेकोनिन्हटेउनोंहावे ऐनीक
चावर्मपकावे जेकोउकच्चावर्मपका
पा हाहोमूलीवीरसंगया जेहा
नेकमत्तलीकयान फोउहईसेनहावे
वात्र पहिलावांचेहेदखमात नंम
सनीतरहेरदाह दर्वप्राहकीमसु
नावेदाउ मसमलाईछोडावे घंडु
प्रद्रिष्टके जोटिकीवांधपकावेपिठ॥

तिनको कहिते वैदग्ध्यनिष्ठः सधनक
 हभ्रदबेकेरे जोगुरपां पासो सिधन
 चेरे माये निवृत्तः सिद्धि जलवे अंतर्मुख
 तरमासेषावे पहापहा पाडुवधेनाहे
 वे सुन सुच वलं नोगीरोवे कचाहे
 इतां जो कंहावे पकाहे इतां चीरकर
 वे तिफहे पानी नित धुलावे पाछे रि
 की निभ्रवंधावे तांते पाछे महसि
 मलावे सिंगरफ केरी प्रहृतमवनं

२५

बो। औषधमहलमका। ईकईकईरंभी
निर्नेजावा। सिंगरफकयुक्कीहारा
ह। यो। उमो। मरहमकोनाह। महलम
गोके। धीपकाको। नह्लाधो। थानचि
मिराको। उपरघा। हुं। हुं। हुं। इच। उ। वो।
कपडे। मे। ती। ले। प। लग। को। फो। उ। घ। उ।
अ। दृ। व। द। पु। न। ज। गं। द। न। न। न। र। ई। स। के।
आ। गे। पं। डिते। जं। ने। स। के। ले। चूर। अ।
ति। र। ग। का। ति। म। र। रोगको। अं। ज। न। ले।

हो ॥ लोंगासमकरसुमीदेहो ॥ चोडी
विष्णुलक्षणसुमीनी ॥ कस्तूरीकेसरन
चकजीरा ॥ सांसीतिष्ठनसुखतनजाई
जादिबनहुतेसोमीपाई ॥ जोविफलगे
लीनितपल्लागे ॥ काहेसंजुनछाछोपा
वे ॥ स ॥ चो ॥ के ॥ का ॥ तोहजस्तुपा
छलेनिम ॥ महिदीसमकरकरीयोके
म ॥ धनोकजष्टकरपांनीडाह ॥ वा
रधारदोनुकीडाह ॥ इसकेपाछेधर

३६

योप्यातु पीपलजटा निंबूसचातु
सतदिनसायकटेनेबर्हावे पाचे
नेगीआबोलणे ईश्वरीचेंउपुरात
नजाई जोदिननेगीबहुतेपारि अथ
मे आ दुका नेनहेग कीसुनीयो
वाता पांनीतेलतेलहीमाता चौथेते
लपछांनोजेत मोतीयांविंदुईहा
हीहोत जबगंदापांनीआंघनैजावे
जिंउप्याडीबदलीदिनपरआवे से

ताहोतौ कानन की जै नीलाहोतौ न
 मन लीजै कछुहोतौ डोष दहाहो
 पनेसुख मलया दहाहो बांछे पटी
 जातुष बावो सांति पद पाछे पटी खो
 लाने। अथ कोहा रोग का मरकडी के
 सर कुं गं मुंटी समस्त भिम्भी रं वन सं
 ठी ईत्का अं जनु पी सवना वो मात्रा
 उम्के अं वी पावो देव शह की मसुना
 वे वो हू ईस्यी जात पुना तन फोला

३०

प्रतां सीतला हे वे फोला हुंपी करी
यो दाता टोला जे हो ह्विचि अप्रापे
धाने। सीतला फोला सुखत गनाये॥ॐ
यस वल नोग का॥ सवल नोग की सुने
कहानी॥ रक्त ने अट्टी प्रावे पानी म
नधि ल संघ के मर संग विश्रि॥ आ
धी ईस्पी हे वे भि श्री॥ जे को ई च अं
जनु पावे॥ सवल नोग की छंडा कटा
वे॥ पाचे रख कंता सारी॥ नही जा

ईकदवोनाडी ३२ बेंका कहति
 जसो दाम्मुनो कान्हो प्रिसमं धोनेन
 तरतान्हो सेवक नेमी कसिये नीसी
 मुंगवपी पलछे छेपसी जवतुन छे
 सलेआने पंजी होष छे दुम्कसे दोजे
 नी मयकिरपी डका सिनपी डका
 सुने विचारो दुषत कन से आबेना
 ना जेन किचिह संग होवे पीडा ननु
 नी कालचना बोनी डा जेपितं कहति

३८

सिचाउ सीतलउषधभायेलाहु
 धनीयामहिदीहेपुधरावे। पांतीपे
 कसंगलगावे। धनीपांचंदनकाद
 पिलावे। ईरूपीरहेताहुधनचलावे।
 जेनैलनदेखोकफवेकार। विपलयस
 गषहावे। सार। सुठीपुहकरभायेला
 वे। बहलेनोगीरमनकरावे। जेनैमो
 अंदरहोवे। लोषए। उमकेयेनो।
 ई। दिनयो। डारातीहो। ईवधेना। हेहा

करवैदोडा लोह्य अथ दंत पीडाका ॥
 जेवाईको दुषपावे दंत ना सुषदिनेन
 ना तीमांत मकर मन्त्री के पीमावे ॥
 आधी ईश्या मर्च मिलावे कच हं सोवे
 दांतो मलीये नैन दिनां ले दांतु न दही
 यो श्रीतल ठौष दम लीये नित जेजा
 ने दंत विकारी नत जे हलून दांत ते होवे
 पीडा मिश्री लाई चवावे वीडा जे हो
 वै क्रीडा दांतो अंदर बहजा तो हेतु जंतन

१५

मंतर भिठी नरुन धां मे दीजे। रुर्क
 जउं की दं लनू सीजे। अथ सुरजंग क
 सेछा चन क जग द्रि ए छि कुटा। अथ
 कर स सेों बांधो मुहिका। किस ह आधा
 किस ह सारा। जुजाने ते वे दस मीत ह
 मारा। सुरजंग गे गय हि जतौ नास।
 उच्च येा कुन गे गी घास। पुनः मै की
 वर्ध कुलां जन लीजे। आद्र कर स सेों मे
 ल करीजे। कोकन वे ना चरषा वेः

गलासाया नागर दसगावै अरु यमिगी
 का केसर कस्तूरी हो गान कचि करणी
 गोगर एया कस्तूर धूप कस्तूरि आक
 दुधलो कसे उमम मिर्चि अरु दे प्रहन
 मगर ईस्पी हरी जंजी ये मिर्चि के
 रीपीर ईस्पी रहे ताप उते घाड छु
 डा गो सीर जा फल के सर हों बह फी
 म कचला सुंठी डाल हकी म वमन
 विने चन पाछे घेन ईन की चाली जं

५३

ने वैदु विघवा पुन वैदन करीयो अ
पं होई तो बहन करीयो अथ प्रवरो
का पको अकश तो चले कने एणी हो
ती प्रवरो जोत विहारी पंछि मो अ
र का नाहुली डोला तेहन करीयो
टि ली कोनो एहा तेहु कामावे रकी
पातिका नडुलावे औ मन्नी ईस के डौ
षद बहुते सकहे डौषद वैदन कह
ते जे प्रवरो होवे कीडा पादामे ल

नकर्तापीडा बलेनपंडतिहिनदेलाई
 कमेवैदपचानतिवाई हिंगुलामा
 कूवाईविउंगु डाल्लकंनुकनीयोसं
 ग जेतुभैमायीमेहोकंन। डौषधि
 ऐजीलीजोभेन ॐ ॐ ॐ गका
 मिठादोहीप्रायोहन्गंरु तेहच
 लवेकनीयोचूर घतूडासायजुला
 वेघूर ईश्वरीपीडाघंटीयादूरः
 पाचेईसकेषाईविदाम डौषधि

४३

गद्यदीयाईस्कानांगु ग्रथनासांवे
गका॥ उमकोजनेवक्तनिकीना॥ उष
घलुकागुनीधोनीना॥ जेदेहीजान
तिवक्तविकानी॥ मक्तनिकाहदीजान
सवानी॥ दीजेपुननरुजनादाकेरी
नचकसायभिलावोगेरी॥ वकरीद
देसंगभिलावे॥ भिलासनेकानच
उने॥ काचीभिलासी॥ भिलापावे
टंजवाहापुयवघावे॥ दोंहकाः॥

कलहिलिखानेपंडुते मयुकरेसमम
 ई हनीमविचानाक्याकरेजेवैदन
 वृजेदाई अथपीनसका जेचाहो
 पीनसकेगमप्याम नामीउलोची
 उपक्राय गुग्गुमहिदीसाप्यपकावे
 तातदिनाईकगानीपावे पुनः च
 पनचनेचनसत्रकर्म देवोपडतई
 सकेसर्मे अथजुकांमका जिसमं
 नसकोलगेठंरु कुट्टकहोप्लीवं

४४

ईसपीमेवे कनोदिनमे निर्नगोकेइ
 धेतग) आठवर्षकीहोवेत्तग) अथकुवसक॥
 सुंठीत्रिफलाचीनीदारु चिञ्चानपुडाह
 हपकाउ ओवसंज्ञाहृदयेहपीहोई सम
 कनगुजमैंगोलीहोई जेकोषावेईसे
 नदार नामदेईमदेहोवेहप्रशिक्षानु जे
 कोइकवर्षतकिषाई बूढापेत्तहोवेजु
 वाई ईसपीहर्ताम्रउमेओवकनंतमो
 गि) देहसुधारेकहमहोओरचटावेसोग॥

४५

अथनुसका॥ वाईवल्लुजवाईएतुदाल
होहागुज्जमुपत्रपीपल॥ लोहनुस
नाथछुठावे॥ पाछेपानेनातपकावेः॥
ईस्पीनुसुपुनातमजाई॥ जेनोजनव
कूलसेगावाई॥ अ॥ वा॥ फि॥ गकाः॥
चरपटिपूछेऐकवच्छूटे॥ वमनविनेच
नसौंजउतूटे॥ ईसंधीहत्तावादफिरंगि
वकरीदूछेनोजनसंग॥ वादफिरंगवे
कहिताअंग॥ नूषघटावेकालारंगुप

पहिले हेरोग ककवे समन जो जुन धावे
 वा कूल वए मिर्चा लेंग तो लाक पूर हे
 काष्ट रज कनीये चर नीला मुन संगई
 सव गोलु आइ कपंनी संग अलो उ
 गोली ईन की वाये हसये। माद पिनेंग
 को कळीव सये गोली हे पून गिमावे
 पाणी सेती दित छुडवावे ईन दिना
 भेजावे तीस ईसेना ही रतीये कनीन
 मुख आने तांले हजु वासा गोली कने

४६

नजानों हासा पथ्यपथ्य की करे मंता
 लु वाद फि वंग को देहु निकल दोहरा
 हर्ता सकले वाद को प्रर रहु नलागे अं
 ग पथ्यापथ्य पथ्य पथ्य योई रहे वाद
 फि वंग पुनः कोच लवी जजवाई ए
 बुना सप्प पाता ती नूहे हद समान
 गो के मूत्र विच लह कलावे धे भुत
 च जवन मुव टोवे मारा गोली ईस्प
 मेलो छे छे ईक ईक दिन में बेलो ॥

जलवा पाछे इसके काटे बोल गोली
 दीजे साथत मोल दोहरा हस्तसूरी
 गरिके डोर ह्ये प्रसूत पहला दोगा पछे
 नीछ पाछे दीजे प्रसूत अथंता बाभार ए
 विध गंधक से तीता बाभारो संधिक
 तोला पतर बगो पतर गंधक साथ रल
 को आठ पहर की आग जलवा ऐतवि
 होवे आवे सीतल पतर नाख गुलावे नी
 तर दो दिन बीच गुलावे होवन पाछे गो

४५

केदंहीयेघावन ऐकवर्सचीसीतलहेवे
ईकसतसीकीसबंहिकोवे ईकईकनती
दीनोंनोगी दोदोरतीदीजेनोगीः सा
पअनूपनजेकोबावे सकलरोगकी
जगंकछोवे अथलेखवांनमारणविद्य
कहितहंकीमहूदेभैमान तोहो कबउ
याहेलोहजान कोरेवासननेजीतरधर
यो वासनलेपब्रह्मलेखरीयो ओ
ठपहिरकीआगज्जलावो चरसमान

दीप की ईसे ठहिरावे इस्थी सत (उ
 ठाने अडोल रोगी दीजे सायत मो
 ले अथ गंधक मार एविध गंधक म
 रुई घाला मण घल्ले ती गंधक म
 ला इस्थी तेल चुगाई अडोल रती दी
 जो सायत मोलु देहका इस्थी ठहरी
 ई रोग धांसी औ नसुयास ठी पछसे ती
 मेल के निरै रोगी धास अथ साय म
 एविध कहित जमै दासुनी यो कान्

पान न मर ले करो सुहान सुख की चेन्ने
प्रत मंगावे। उस के अंजन साव धरा के
जिम दिन पाछे षोहें राखु पानी डाले
तदर दाख। पाछे इसी टिकी करीये
टिकी जाये नीत र धरीये। प्राठ पहिर
की प्राग जलावे। सीत लहे इत न क
छ मंगावे। पाछे मंगल ते सीत लहे वे
सा प्य प्रजु पान नो गी देवे। दोहरा
इस्यी हरत दायी रोग पित क रंता न

॥ चंग होवे पंडते जो दिन रहते धाम ॥
 अथ चंचल को उपाई वावची पवाठ की
 ज तिलचुकी रहत दलहलद मोयू
 कुठ चरै कर को उते लनिच पाछां
 ता पाछे धाध गो की विच मलएँ चं
 वलहति घघर पुन कजाई अथ दांत
 पीडा को चंचे के पात लोघ पां नीका
 थ कर कुवली करने पुनः हिंगुवेर की
 गिनी जवाईए कुठ सेधा कपुपान

नरस्य चने के पाउस सायबलुवने
 गोली चरे प्रमाण ॥ दंती घसली पीडा
 जाई ॥ पुनः ॥ जुवाई को पिची होवे पीडा
 सातपुदिने नराती सात अरु कन
 नीले पीसावे ॥ आधी इस पीसावे चमि
 लावे ॥ जब हंसे वे दातो मलीये ॥ नैन दि
 ना की दातुन कीजे ॥ सीतल डोष घम
 लीये ॥ नित ॥ जे जाने दंतव का रीति ॥
 जे हल न दात ता होवे पीडा ॥ असि लाई

चरावीवीडा जेहोवेपीडादातोसुंदमि
 वहिजातारहेतुअंजमंत्रकर मिठीचसुन
 बाएंदीजे अरकजडांकीदांतनकीजे
 अथचक्रपडीका हलदुटंका १४ षडुबंकि
 घटुटंका १६ मिह्राईषाई अथधर्तिका
 पलासकीछिलसुकाईकरवासीपांणि
 नालपीवे अथस्त्रीजनीका कसीसि
 जुदकलीना चोटलीदेतउसेकहोई॥
 अथदंदका १७ धनधारधारयासितरे

हृदय आवले १ पवाउवीज २ बट्टांगकदि
 दाहा अथपेहेका समुद्रफलिकेजी
 सोधसमंजनुकरे अथधुंधका अर्च
 बीससहस्रोंकासीविचनिंमकील
 कडीनाल अथछाईका ईद्राणीके
 फलियहिल्लदमेहरदेदिनेंपानीसें
 घसलावेरातीसेवेतामुखधैईठाले
 पुनः अंवेलेकारसहगावेछाईजाई ॥
 कुलीकूदुल्लावेछाईजाई अथनमस्क ॥

१८ जीरादकायुः अतीसः बद्धीगाधरचूर्न
 नीहेक लवंगगंधरः अतीसः कायुः चूर्नः गोतीस
 दितीसः तिपियरः संगुहः मिनाई ऊरुचः मलकोकायु
 सीकसिनागंधरः गुलमः आमवातः पिपलादिचूर्नः
 तमसि आमवातकेचूर्नः क्रिमरोगकेचूर्नः
 अरुनोगः विम्वचकाः अरुकोचूर्नः
 दाल उदररोगकेचूर्नः पांडुकमलवाईको अरुको
 मिस अंजनरोगकोः दारुि रोगको चूर्नः
 औषध हिउकीकोः चूर्नः अरुकोचूर्नः अरुकोचूर्नः
 लो स्यासः कासः वादी कीषणः गोतीसः
 ए अंदागनः पुधातरः गुटकाः चूर्नः
 ए विम्वचकाः कुंडुवाईः अंडः अमैः अरुको
 ए अमैः अरुकोचूर्नः पथरीः ककरीः

हृदय आवले ॥ पवाउवीज २ वटणं ॥ प
 दाहा ॥ अथ फोलेका समुद्र फल ॥ १९
 सोचसमंजनुकरे ॥ अथ घुंघरु ॥
 बीस सहत सोंकांसी विचनिंमकी ॥ गाईल नन
 कडीनाल ॥ अथ छाईका ईडाणी ॥ दसिन ॥
 फलिय हि लहद मेल रेछे दिने पानी ॥ २०
 घसलावे राती सोवेता मुखे ॥ गाईल नन
 पुनः ॥ अथ वेलका मसलगावे छाई ॥ अथ पित ॥ २१
 कुली ॥ दूधुलावे छाई जाई ॥ अथ न ॥ २२

- ११ कीपरादकाः पुः अतीसारः दधगंगाधरचूर्न
 १२ लक्ष्मगंगाधरः अतीसारको कायुः चूर्नः गोतीप्र
 १३ अतीसारः संग्रहिणीनाई उरुचः मलको कायु
 १४ मवेसीको चूर्नः मूलीमवेसीः नगंदरका उषद
 १५ नगंदरः गुल्मः आमवातः पिपलाधिचूर्नः
 १६ आमवातको चूर्नः क्रिमरोगको चूर्नः
 १७ मूत्ररोगः विम्वचकाः मूत्रको चूर्नः
 १८ उदररोगको चूर्नः पांडुकमलवाईको अवेरु
 १९ प्रजनरोगकोः दारिद्र्यको चूर्नः
 २० हिडकीकोः चूर्णः चूर्णः चूर्णः चूर्णः
 २१ स्वासः कासः वादी कीर्णः गोलीः
 २२ प्रदागनः पुष्पांतरः गुटकाः चूर्नः
 २३ विम्वचकाः रुद्रउगईः संडः प्रमेहः अवेरु

३५ मूत्ररोगः पथरीकोकायु चूदनः
 ३६ मृगीरोगकोनासः कुचरोगकोचूदनः
 ३७ मनिषादकायः स्वतकुषकोकायः ॥
 ३८ स्नेतकागः कंडुः श्रामोः कोलेपः मर्दनः
 ३९ लज्जकोलेपुः पिंमोः कोलेपुः ॥
 ४० नादकोनागः अघातावातः चाईकोकायु
 ४१ चाईकोकायुः वाईकायुः लेलुचाईकोकायु
 ४२ चाईसर्वः पितः दाहः अरुणकोकायु
 ४३ कफकोचूदनः काचनारगुगुलुङ्गमागुगुलु
 ४४ मुखपकेकोः रक्तपातकोः मुखपकेको
 ४५ कीहकाः चर्दकोः पीनसः जलप्रसीसः
 ४६ नेत्ररोगः अजनः नात्रमृद्यकोः प्रलज्ज

विदुको सो दास पुन पन सुषे ऐं विरचते
 विषमनोत्सवेना जीवनी द्वा वात पित्त क
 फवर्ननां साधक साध लघनं काल चक्र
 वर्ननां प्रपम समुदेस न दोहरा हिडकी व
 टिग्रहि मूर सास्वास कास म्रती मार वि
 तवा ईक फरि विदिजर ईन का कहै विवा
 रा ॥ अथ पित्त ज्वर लघन मूर्ध्ना हृषा
 प्रलाप पुन सिरो वरति जूम वित नेत्र दा
 हि कटुता वदन रो लघन ज्वर पित्त ॥ ८
 अथ कफ ज्वर के लघन दोहरा कास

चक्षुषो मां च गुरदे उमुनिद्रासीत वम
 नम्रमचमुषमधुनताकफज्वरलक्षण
 ता ३५ अथवाईवरलक्षण दोहना
 विरक्तो मां च नूमुसीति कं पञ्जजाई
 मोहकि च लज्जु कषायमुषुऐल घन
 नवाई ३६ अथमलज्वरलक्षण दोहना
 आरुष्यपी उपलायनमुदाहसोषप्रव
 पि कस्योत्सु वैदविचानकेऐल घनम
 लिताप ३७ अथजीर्णज्वरलक्षणो
 दोहना वमनविरोचन उदयदुष्ववसुउ

नीर है जाना लखनर सज्जन के कहौ दे
 षष्ठ्य सुपकार ४३ अथ सेदजन लख
 ने निद्रा जंच सिट फुनत न होई संग पसे
 द कहौ सुवैद विचार के ऐ लखन जुन
 वेद ४३ अथ दृष्टजन लखनो जोहरा
 निद्रा जंच सुफटत न उदर पांउम न सं
 ग ऐ लखन जन दिष्ट के कहौ सुष्ट्य
 जुमग ४४ अथ कालजन लखन सी
 सुतपति पत्र से दुतन कर पद सीत लहे
 ई ऐ लखन जन काल के तिसै उपाई न

कोई ४५॥ अथ ज्वर पत्र पत्र अथ वधिवर्नते
 दोहरा ॥ कसबा सूर मित पित की कफ दाद
 सपरमान् सप्त दिवि प्रामित वाई की ज्वर
 पत्र पत्र वधिवर्न ॥ ४६ ॥ अथ ज्वर मुख लक्षण
 दोहरा ॥ सिर नैतु परसे डत न देही लघुता
 नाम मुख पाके न दुःखता ईहल च नि
 जन नाम ॥ ४७ ॥ अथ लघु मुख सिं न लिखते
 चौपई ॥ मुख कपई पुलकन मूल ॥ ककैडि
 सिं भी कडु कचैर मुख ही गिलाईले
 आवारे साहलु यपी हल धपी पने ॥ ४८ ॥

धिक् मिर्ची कलौजी की हजु मान पितपा
 प्रजापत्र च्युप्रान अंग धनवं प्रसाकुडा
 मिहार्ई लोचनवाला मर्वा पाई तजु
 पतीरु सुनंदा नुठान मुषपपटेह
 जनान अंगन विज्रा अजया पीपन मरु
 ई औषद मेल सजतुल ५५ जई पाहली ति
 नई ताजं सज औषध ते म्र घ म्र न ५
 इन औषद के म्र म्र ए कने नृ म्र म्र
 दर्शन ह धुता घने ५५ तपतनीन

सौं पीजे घाला। आठौ ज्वर न मसहत
 काल। कह्यो हत दान रह। ई पंडो
 का महा जहाई। मरा। ही वांगं दित्य
 मूल मज्जा। ई मन पात तेर हिन रह
 ई। रोग प्रने कना मसहित रज्जाई। वै
 न कवै शर कहो वषाज। अप्य ज्वर न
 म। दोहरा। सुठि पत्रिच अरु पीपरे
 टिक अठ पर भानि। गंध कवि लु

पादादकहो टंक दोई हे ठाम ॥ ५४ ॥
 बीज धतले टंक दोई पीसो हठौषक
 सिई रसमदरकसौं प्रदीये गुयक
 गुजहि गोई ॥ ५५ ॥ गोहीषावै प्रातुडि
 रसमदरकसौं धातु तपतकधावा
 प्रकोनसै एततका ॥ ५६ ॥ ज्ञानीज
 नितको चौथाई ज्वरजाई सुखमविष
 मजुसीत ज्वर उदरमाधनरहाई ॥ ५७ ॥
 महोजुरंकसनाम कहुस्त्रै तेपहिम्रान ॥

वैदमनोवचग्रंथमैजाबाकहोवबं
 नमः प्रप्यसिद्धिजनकस दोहा
 सीपजसमहताहसमसटेकुकुहे
 हिविचार नीतापोपाटकवैतिनपु
 टदेहभिलाईकयमापप ओवदसं
 मटमेचनोहसोकोगजपुटदेह प्र
 हिंदयोईपार्विकरलोमीतलुहोईनु
 होह ई मुंजादे सुप्रमदगुरुषु
 उमोदजैमोई वडनग्नपय

दीजीयेनाससर्वज्वरहोई ॥ ६१ ॥ कह्यो
 मुनं कसमचर्कमतिपंडितुहेतुविचार न
 सेतापमनेकविद्यसिद्धप्रगटसंसार ॥ ६२ ॥
 अथज्वरकागुटका दोहरा ॥ पीपरमन
 सहनीचफलितसुजुकहेपाई ॥ मोह
 कीजेप्रातर्छठज्वरत्रिदोषमिदजाई ॥ ६३ ॥
 अथपित्तज्वरकेभूए सोरठा ॥ पित्ति
 पापडा ॥ अन्नजलमेंपीजेप्रातर्छठ ॥
 टंकदोईपरमाणुदाहपित्तज्वरहोई ॥ ६४ ॥

अथ काहुवरको चरन चौपई लोचन
 बाला मोया ज्ञान चंदन पितपाप उठ
 न सुंछि सुनीर नीर सौं लेहु दाह पितवर
 नाम सकनेहु अथ कफ ज्वर को नाम काह
 दान ग्रंथातु होला सुंछि प्रचक्र मुक
 ई फलु पीपर ताहु मिलाई नाम जुली
 जे नीर सौं कफ ज्वर छिन मै जाई ६६
 अथ चाई ज्वर को चरण सोमडा सुंछि
 सो चर पाई पीपर मरि चरिताई ता

कुडिधिचारलाई चूक है जुवात ज्वर ॥ ६७ ॥
 अथ मलज्वर को कापु सोरठा गंधक
 प्रदुक्त नीयाम्लमोषा कडुहरीतकी ॥ ६८ ॥
 कापततकाल मलज्वर रुक के नासबै ॥ ६९ ॥
 अथ दूरननसुषुका कोहका अजमेका
 सोहरीतकी सौंचनताहसिलाई सीसपी
 डजलतपत सौंसमज्वर छिनमें जाई ॥ ७० ॥
 अथ षोडशज्वर को उपाई दोहका मर्दिनि
 की जै अंगकें तेलतिलन को लाई पुन

मज्जनजलतपतसौं धेदुतापमिटज
 ई ७० अथदिष्टजरको चूनण दोहरा
 पीपरममचिचिनाईतासुठिहिंगुसमघ
 ल चूरनवावैटककोतापदिष्टकोटा
 ल ७१ अथपित्तकफकाईजरको चूर
 न दोहरा मोथ्यासुठिचिनाईतापित
 पापडाजान पीपरकडुगिलोईफुनि
 ऐसामपीसौअंन ७२ ईहूर्नसुप्रह
 लकहिजलसौ पीजैप्रात अंनतपित

मदन की धौली न दिन न सु सुनें ग रहि
 पाई गुंजा सम गोली करहु प्रान्त उठन
 विषाई ॥ ८५ ॥ दो० संनृपात नीतंगक
 पहि भजन वेला गोई मंदाग निहु दमा
 दचमु रते योग भिटाई ॥ ८६ ॥ स्रय स्रय
 दस मूल बाहु संनृपात को ॥ दोहरा ॥
 दो० चनी यां मोच चिराई ताक डुंई दि
 जहुं जान देव दनु रस मूल सुं छिन्न
 जप पीपन म्रान ॥ ८७ ॥ काय जु कर के
 जई संनृपात जवर जाई तह मोह प्रला

पकमुकंभसासकासमिच्छाई ॥ ८८ ॥
 पसंनकेअंजन्ने-त्रिकुटात्रिफला
 हंगुवचमेंघाकडुमिलाई पीलीपर
 नोंसप्रसफरुएडोषफसमनाई ॥ ८९ ॥
 अजाअज्ञसौपीसकैकरअंजननयने
 लिअग्निदोगहुनमादतूमसंभ्रषाति
 नरहाई ॥ ९० ॥ देहकातिमअधनिसने
 गुमनिनूतदोषमिदवरता नैदमुक
 होविचारकैएतेकैरेविवर्त ॥ ९१ ॥ प्रप

पीपरादिका धुसंनपातने॥ पीपम
 लचिनाईतासुंठीताहमिलाई॥ कायु
 जुकरकेपीजीयेसंनपातज्वरजाई॥
 ५२ अथअतीसारकोचकिट्ठा॥ जील
 वतीवटी॥ चौ॥ अर्चमस्तकीदाउमकली
 लोचनबांशांअंगुठ्ठी॥ लोचनरह
 टीभाईघाईमाजफलसुमेचनमिफ
 ई॥ कुजजारफलकीकरपूतिकथुवि
 नांगअवरममतलि॥ ऐसडौषधसाग

जुवान पेठेनी जगिरी तन घा ५६
 पोसत जल सों गोली की जे एक एक
 पदमं एघरी जे तंदुल जल सों पी जे
 उग्रान तांको गुन को ल के वर्षान उद
 नम ठाय पु देता स अती सार सप्तम
 ईना स ५७ अथ बडि गंगा घर चूर्न
 अती पार के चौ मोया सरल सुंठि
 मिलाई पत्ती स मोचन सुग्रान र लाई
 लो धूल जाल आई घाई कुजा पठि

३३ जै ॥ ५८ ॥ लोचन वासा पुनमधु
 पाई तंदुल जल में पीछे मिली ॥ ३४ ॥
 जातु मधु पाछे लेतु अती सादु धिन
 हयं जेह ॥ ५५ ॥ अथ हल धुगंगा घन चरन
 दो ॥ लुठि घातु नीमि चर सुअज मोद
 सुमिली ॥ पीस घाघ में पीजीये अ
 ती सागर जुन साई ॥ ५६ ॥ अथ अती सां
 को लेपु दो ॥ आम वीज अरु जाई फल
 अवर हफी मसु घाल जल में लेप नि

नाचपरश्रुतीसारकोटल ॥ अथनम
 नादिकापुजरश्रुतीसारको दे॥ मोच
 गिलाईचिनाईलासुंठीकुजपतीस ॥ अ
 रजागजलकापुनमिश्रुतीसारजुन
 सा॥ २॥ अथनमश्रुतीसारकोकापुचौ
 लेचनरालाकुजपतीस ॥ मुप्रावेति
 जुसममविपीस ॥ इनकोकापुजुनसु
 मिलाईसुनतेश्रुतीसारजुनसाई ॥ ३
 अथश्रुतीसारकोगुटिका ॥ देहरा
 लोचईकजौमोचनसुमुप्रावेतिमुघाई॥

गुटिका दीजे वे रसम अतीसार भिटाई
ई ४ अथ अतीसार के चूरण दो में घा
सौ चरहिं गुवि चि शिवा पत्नी स भिलाई
पीस पीजे जल तपत सों अम अतीसार
भिटाई ५ अथ संग्रहिणी प्रोग च कित्त
धुत्र पंचक कायु दो ॥ धनीया सुदिगु
निगाहा विल कथु घाल कायु जु न रि
ने पीज ई संग्रहिणी कहु टाल ६ अथ
संग्रहणी बाई मूल के चूरु चौ ॥ अथ
सुहि गिलाई पत्नी स ॥ तपत नीर सौ पी

जेपीस। अममरुचसंग्रहणीजाई। काई
 मलचिनमंहनसाई। ७। अथममम
 रुचसंग्रहणीकोक्कापु। गाईनचंद
 पेटे। लभोचलजालभोयाविलुसुंठि
 सुपावहे। छनीयापतिसो। गिलोईवा
 ला। कुजाछाईमिलावहे। समपीसउ
 षदका। पुकीजे। प्रातउठकरपीजीये
 मममरुचमलिसंग्रहणीनासकनी
 ये। १००। इतप्रीवेदमनोप्रथविनचते

मंत्रपातस्तमिषावसंग्रहिणीदोगप्रति
 कानवर्नतेनाप्रद्वितीयसामुदेयः १०५
 अथमवेसीदोगचकित्सासादंगघ्नमत्ता
 सूरजवटी दो. एकमविचनिवसुठपु
 नचिज्जागाठप्रचंन सूरनषेडमजाग
 लेचूरजकरोसुखान ११० दो. दुगनले
 हगुडपाईकेगोलीकरोटंकडोई पेडु
 आयकनागुलमंगदनाममवेसीहोई १११
 अथचूर्निमवेसीका दो. अरलचिज्जा

ईह्यै सुठिमें घामे ल चरन पी जैत त्त
सों रोग मने सीने ल ॥ १२ ॥ अथ बूनी मदेन
कैं छौ बंद सोरठ ॥ बडी इला चिआनि
धुतिलौ गहि सों की जीये ॥ टंक सात पर
मंजन रक्त मवे सीना सहै ॥ १३ ॥ अथ मवे
सीना चरन दो ॥ मूरन वच मूरु मूरु ल
कुज सुठि संजाई ॥ सीस छा घसो पी
जीये रोग मवे सीनाई ॥ १४ ॥ अथ जगंद
र रोग प्रतीकार दोहा ॥ दंती हलध

नमो बल्ले रे पीसु नीरमिलाई। प्राक्तन
 तैले पनक वैरोग सदां विजाई। ॥ अथ
 जगं प्ररोग प्रतीकार दो। सौं घासुं ठिसु
 दास पुन बहि मल्लर सुधि नोई। जाई प
 घासुं लाई के नाम जगं दन होई। ॥ अथ
 गुलम रोग प्रतीकार दंड मतल। दोहा
 सौं चस्में घासुं ठिहिं उम्रा दलेन पुन जं
 न। अथ या पीपर अज मोदा विडं धाम ज ॥ ग
 वम्राव दोहा। इनकां चूर्ण की जीयेषु

तसो छाई मिली गोली मूल विस्
चका अनुसूजीवन जाई १८ अथ मंत्रा
मवात नोग च कितसा दो सरसो सु
ठिनु हाजना विसंघपदा सुरदा २
काजी सो जूले पीये मूल विस्च निवा
१५ अथ पिपदादि चूसा मवात के
काह अथातु चौपई पीपद पठकटा
इजान सुठि सुअनया जनि म्रान
मोथा चित्रा पीपद मूल गजपीपद

मेलोसमभतुलि तपसिनीरसौ फीजेव
सः आम्भवातकवहनहीदीस ललभ
दागनिनंगहिरहाई बालीघासीधिन
मैजाई २१ अथप्राप्त वातकोचूर्णः
दे। सुठिविउंगहरेतकीदेवदातुसु
मिलाई तपतछिदकसीकीजियेसगम
नाईनरहाई वं३ अथप्राप्तमनालनेचू
रन योगशक्तु दे। दालहवधरे
उपुनित्रिविभउंगपतीस मरचईदि

जै आननेली जे समान पीस ३३ दो
 सदावार सौ पी जीये जंगम वात न रहई
 पाहि चरण सुप्रसास की हयोग सतामत
 गाईर ४ अथ आन वात को कायु दो
 गूगल शिव पुन दल निभा सुगिलोई
 कायु जुकर के पी जीये आन वात के
 बोईर ५ अथ क्रिम नोग प्रतीकार दो
 सेंद्रा विदी विडंग पुन पी सो समकष
 ये गा ॥ तपत पुन रुके पी जीये नासे क्र
 म के रोग ॥ अथ क्रम को चूरन दो

त्रिपल विद्रुदा त्रिरीवचनि पंचर्च देवाइ
 यदि रतुडा सुमिनि उग सुन चूरन करोमि
 लाई २० दो० घेनु भ्रज मै पाइ कै टंकतीनि
 परमान सप्रदिवस जव पीजी ये होई छुद
 रक्रम हान २८ अथ प्रहलोग प्रतीकार
 दो० सौचर पुहकर सुं ठिहि डुआ नहुममि
 कर जाई पीस पीडो जलत पति मै न्पुति ३
 निष्प्रची जाई २८ अथ निष्प्रच काचरन
 दो० पीयर भरचि सुं ठिहि डुमे घा जीने दोई ॥

अजमोद जल तपत मो कव हं प्रलन होई ॥
 प्रल विप्रवजाई ॥ २ ॥ अथ चसन प्रल के
 मोन हा ॥ तुवन पुहक प्रल लवन तीनि व
 रहि ॥ अमघातां मे च प्रजवाई न सु
 विजगे सुन ॥ ३ ॥ मोन हा ॥ टंक टंक पत्र
 मान ईह जोष धस मली जीये ॥ त्रिनीति
 न टंक जानई न का बरन की जीये ॥ ३ ॥
 तपत नीर मे पाई टंक दोई नित पी जीये ॥
 प्रल गुलम कफुज ई अमवात अचि

मंजगदि ३३ अथ चूरनसूत्रका दो
 पीपरसुंठहीतकीसौधरत्रिनीसमंज
 तपतुदकसौपीजीयेनाससूत्रकोज
 न ३४ चूरनउदररोगको चौपई पंच
 लेवनत्रयषारसुठान मरचापीपरि
 चित्राश्रान जमशाकजुमुसवरसुने
 देहुक्रमरचोटहीगुनौ टंकरोकचूर
 नजाई उदररोगकोनासुकराई ३५
 पुनः चूरनउदररोगको दो सुंठम

रत्नचक्रपुपीपदेमिलज्जीतसुमित्तार्थ
 पीसपीठुजलतपतमैष्यह्नोगना
 नहाई ३६ अथपांडुकमलुवाशोगप्र
 तीकाय दो. त्रिफलाकडुकिनाईता
 वाप्रातिनंगलोई कापुसुपीजैसह
 जसोनासुपांडुदिहोई ३७ अथक
 मलुवाईकोअवढेतु॥ दो. लोहचूना
 त्रिफलाकडुदोनोनजनीघाल घृत
 मधुसौजवचाटई कवलजईकोटा

ल ३६ अथ कमलना को पो दही नै
 फले दं दाल से पी सके क नै पो दही से
 ग मी चना स का चा स क रि जाई फी म
 ल योग ४० अथ योग ने अंजन जे म
 ल द सु आ ने कर अंजन नई ना हि क
 मल नई नो ना स हो म सु र प य जे ला
 ई ४१ अथ दई नोग प्रतीकार दो ला
 गं घ क सुं हि अरु पी प दे ल वं ग सु मिश
 नी पाई जल से पी जे पी स क र दई

अथ हिउकी प्रतीकार दे० विष्णु
 श्री हारा पुनपीसहुदोनोपाई नास
 जुही जे प्रात बुठ हिउकी वहरन आई ॥ ४५ ॥
 अथ हिउकी को वृद्धन दे० मन्त्रालोम
 अनुसुठ पुनगरीवेरकी घाल मध्यमें
 दीजे पीसके हिउकी पीडा टाल ॥ ४६ ॥
 अथ हिउकी को घूरिणी दे० मनसहि
 हलधि जुअनके पीसो समकरयोग ॥
 वदन जुधमनी लीजीयेनासे हिउकी

योग ७॥ अथ चर्दनेोगको प्रतीकार ॥
 दे ॥ चंदन मोथई लाई चीला जाके ए
 लनंग ॥ नेरगरी मरु कबल फलु लसंग
 लुके मरु सुप्रपंग ॥ ४५ सोरठा ॥ मधु
 मिश्री सुमिलाई प्रात उठ जव चाट
 ये ॥ चरदनेोग मिट जाई सिधयोग पं
 उतरहो ॥ ४६ ॥ अथ चर्दनेोग अचले ॥
 सुंठिला जा सिता ला वंग कबल ली जम
 तुलाई ची ॥ चाटहु मध के संग धर दि

रोगकोंनासवे ५ ॥ अथ स्वासनोगप्र
 तीकार चौपई सुंठीपीपरककउक्षि
 पुहकरमूलकबूरनडंगी मोच्यामरच
 तपतजलहेतु स्वासकासकोनासकरे ॥ ५१ ॥
 अथ स्वासकासकोचूनन चंद्र कंडि
 प्राचीपुहकरमूलजंजन वंसाअनुकु
 ल्यसुंठठान ऐपीससुपीछैतयतिनी
 २ ॥ सोस्वासकासकीजाईपीन ॥ ५२ ॥
 अथ कासनोगप्रतीकार गोग्नीषंघकीः ॥

दो॥ सुंठबहेडा पीपनै कक उमिंगी
 जगु मुखमे गोली नाबी ये होई बंध
 की हान ॥ ५४ ॥ अथ गोली बंध की दो॥
 चंसा सुंठ पीपनै ऐसम पीसो अन्न ॥
 गोली की जैस हजसो होई बंध की हान ॥
 ५५ ॥ बांसी घासी के त्वरन दो॥ बांसा
 सुंठ पीपनै चक्क कटाई पाई पीप
 पी उज्जलत पतिसो बांसी घासी ज
 ई ५६ ॥ अथ बांसी का मुकुट बांसी की ॥

दो ॥ कंचु विषु कौडी मन्त्रै जसुति ॥
 पंचतंजि प्रमाण गोली मंगल मान
 ननु कफुषा सीकी हंन ५३ अथ मंदा
 गन प्रतीकार ॥ दो ॥ पीपर त्रिनीहरी
 तकी सुंही सौ चर्पाई तपतिनी रसोपी
 जीयै मंदगनिकहु जाई ५४ अथ मं
 दागन को चरन दो ॥ सेधा शिवा
 सुपी परै तां महि चित्रकु घाल पीस
 पीउ जल तपत सौं मंदागनिकहु दाल ॥ ५५ ॥

अथ द्वादश करगुटिका ॥ त्रिकुटा त्रिफ
 लालेन हिउं अरु अजवाई नमेल ॥ स
 भिगुडिगोली की जीये मंदागनी कहु
 नेल अथ चूरन मंदागन को चौ. से
 दारो चरवाई विउं ॥ त्रिकुटा त्रिफला
 त्रीन लवंग चित्रा हिउं अजवाई नगान
 जीरे दोई रावदा आनु ६१ ईन ठोष
 दिको चूरन कनो तीन पुटिनी वकी ५
 नौ ॥ दंक दोई प्रात पुठ पाई मंद अ

गनिचिनमंहीजाई ६२ अथविश्वचक्र
मूलकोम्वलेहुचौ. सेंघाकुटुचोकरतिहि
तेल तपतिकवैचूनकोमेह कपपदुम
देनकोएला ६४ इतश्रीविषमनोर्धकष
दफास्रवासमंदगनीविश्वचक्रानोगप्र
तीकारवर्ननंगनामचतुर्थसमुदेस ४६५
अथकुंठवाईप्रतीकार दो. ज्जिसेंघ
हिउधनिकटिकतेलकोपकाई लेपसु
कीजेप्रातर्षुठअंडसोपजुमिटाई ६६

अथ अउरोग के अरु न दो विफल अरु
 न की जीये धेनु मूत्र महि घाल प्रातस भे
 जब पी जीये अउर सो अथ कहु टाल ६० दो
 ईरन तेल सु रिहा ल पुन पई घृत से मंये
 म प्रात काल छिछ पी जीये न से अउर ३
 ग अथ अरु अरु के लेप दो जीव न न
 सुकुट पुन विच होवे न मिलाई कांजी में
 जब ले पीये अउर सो अथ मिट जाई ६८
 अथ प्रमेह नोग प्रतीकार दो मरुह

सिलाजीतजवषानघरिजलनौपीसै
 आन मूत्रकषप्रमेवकोनासईहंगे
 जानु ७५ अथमूत्ररोधनप्रतीकार दो
 मूत्रोविषा आनकैतांकोजलमहिमेह
 नाजतलेजवलेपीयेमूत्ररोधकौरेलु॥
 अथमूत्ररोधकौकायुः छंद गोखनुज
 नासाअमदजुआनु पषाएनेदजुकनी
 आलजान यहिकायसुपीजैसहति
 सौमेह सोमूत्ररोधकौदेहुनेल ७७

४.

अथ मज्जनोगकोचरु दो. त्रिफलाने
 घागोषरु वीजकटाईखाई तपतिनीर
 सौपीजीये मज्जनोदनरहाई ७८ अथ प
 यरीरोगप्रतीकार मंदसंग्रहातु दो. र
 नंभुंठीगोषरुकापुकनरुसमजाई
 पावहुगुडजवषुरपुनवातपयरीजन
 रहाई ७९ अथ पयरीकोकापु दो. व
 रनीअरलीगोषरुसुंठीहरदुमिलाई
 अस्मजेदकनीयालसमसिग्रतुचासम

चाई से. कापुसुयाकोंलेहुमूजबध
 मरुदारदुष ८. अथमज्जीरोगप्रतीकम॥
 पुहकरादिकापुमज्जीरुनभादकफुवि
 मचकाको. दो. पुहकरमूलचिनाईतावे
 लीसुंठिकचूर दमहनदसुरदारवचमे
 प्रापीपरमूर ८२. दो. अजयाकुटसर
 मचिलुनीजैकापुजुअन मज्जीरो
 गउनभादकयदोगविष्चीहान ८३
 अथनासमज्जीरोगको. दो. मरचैसे

हउमहिद्यविदिवसईकीसप्रमानः ज
 लसे।नामजुहीजुयेहोईमगीकीठंन॥
 ८४॥अथमगीरोगकोरहंघटैतु दो
 बंहमिनसबचब्दिसुनसंखाहुलीघात॥
 गोघृतिगहियहिमिघकरमगीउंन
 प्रादहिटात॥८५॥अथकुष्वरोगप्रत
 कारचौअफलावासानिमुपटोल॥
 पाईरमिलोईसुमप्रकरपीजैतोतः॥
 क्कचूनपीजैजलमैघात कुष्वरोग

नमो तत काल ८६ अथ कुशने गकों
 प्रनन गार्दन धंद त्रिफला मजीठ गि
 लोई कटु की निं मुनि सासु जा ए हों व
 चदार हरद विउंग वांसा देवदारु मुञ्ज
 ए हों समीप सतु चरन कनरु विधत्सों
 पीली ये पानी मंग कुशरो गजु पव
 लन जैना सहोई कंडु मंग ८७ अथ मं
 जिष्ठा दिका यमा वेग धर मतातु वित
 न लक के दो मं जिष्ठा त्रिफला कडु र
 जनी निंब गिलोई देवदारु वच पीसने

॥
कापुसुकी जै सोई ५० दो-प्रात
हउठरूपी जीये वात न कन रहई
अस्तन मंडल पामतै दिन डकु बभिय
ई ५१ अथ स्वेत कुष के लेप चौ
पेजा बिंदु कुटुब चवीता ऐस मपीसा
भेरीतीता लेपु लुकी जै कांजी आन
स्वेत कुष नमो ध्रुव ज्ञान ५ अथ स्वे
त दाग के लेप मनस लचित्र कुव
वची वाडे नम्र भिलाई कांजी में ज

बलेपीयेत्तेतकुब्जनरहाई ५१ अथ
 सेतदागकोंलेप दो. अन्नलजाह
 अन्नकोंलेपुज्जकरहुनगडाई सेतदा
 गकीहानकैकहोवैदमतलाई अथ
 कंडुकोचूनन दो. मिंववाक्कीदाल
 हुनदअरुआवलेवेरलाई पंचंतीनयो
 तक्रसौंपीवतकंडुजाई ५२ अथ
 भवेगकोंलेप दो. अन्नचैपुनसिउ
 रंपकहौंमहवीघ्नसोयोग मयने

५६

लेप लुकी जीये जाई आम के रोग ५४
प्रच्य लेप आम दन द विचर्व का को दो
गंधक चो क विउंग पुन सिंगन फरु उ
सुजात हरद पवार संघूर पुन पीसे
सम क निग्रान ५५ कन क निंदु लो
लन स लेप हुई न हि मि लाई आम रोग
ग अत्र व चर्व का ऐते रोग न साई ५६
अच्य आम रोग के लेप जो गंधक
हरद मि लाई नीला चो प्या वाच चीस

मर्जुबो कनकाई सजते गुडगन पवार
धरि ५० कटुकते लमे पाई मरदन की
जैती नदिन महिषी गोवर काई न
मे पा मने कविधः ५५ अते पपाद
दकंडुको दो देव हृद म म पीस के
ले पौ जल म जोग पा मदन द्रुषि
रस गदिवाना मे दे ते रोग ५६ अथि
ले पल्लव को चौ चंदन कुठ संजाल
पाई कनक मार को स म जाल ले पु

जुकी जे जलमहि चाल लखि व धा
 धिन माह सु दाहा १०० अथ धिं मरोग
 प्रतीकाय दो कदली पात कनस
 करितां महि ह्रदि भिहाई लेप जुकी
 जेनी रसौ धिं मरोग न रहई १०० अ
 थ धिं मरोग को लेप दो चंदन हन
 ताल कप्र रंठान सुहागा मूली बीज
 आन जंजीरी रस सौ लेप जु लाई
 धिं मरोग धिं न माही जाई धिं मरोग

कोलेपु सो गंधकचंदनमंगननिव
रससोलेपीये दिनमसातपरमंगन
पिंमरोगकोनामसहे ३ अथनारका
रोगप्रतीकार दो अड्डगदसीपीक
दौदछलोपीजेसोई निजउषदपंडत
कलोनामनामकाहोई ४ अथअघा
तकोलेप ककजंधकोमूलकुटिश
अघाईमैमेलु पीअरकूपरवाहपुन
नासैइनकोपेलु ५ इतिश्रीवैद्यनोर्ष

कुनं उपर मे ह म्म क ध म्म रोग म्म गी कु
 कं ड पा म द र द वि च र्च क ल ति थिं म न
 न ना ष ड् इ व र्ण नो ना म पं व म स म दे सः ५
 म्म प न ता प्र ती का र चं द म्म न ग ध कु ट
 ति ल न्पा म ज्ञा न स म तु ल्य वं ड मे ल
 ड सु ज्ञा न य हि डो ष दि ह्मी जै धि त मि
 ला ई म्म ज्ञा त म्म दि धि न म्म य हि ज्ञा ई ॥ ६
 म्म प न ई क्को चू र न चो - जं ग मं ज्ञा ल स
 ग र म्म डी त हि मि ला ई चू र न दी जै ट

कद्वैवात्मनोगनरहाई २ म्रथगुटिका
 वाईकों चौ. पीपरचित्रकम्प्रसगंधि
 म्रान चवकविडंगजवाइनिम्रान सं
 ठिकलौजीपीपरभूल ईहडोषदपी
 तोमनतल डगएंगुडमेगोलीकने
 एकदोईपरमानमधनौ प्रातकाल
 डुठगोलीषाई वातचौनासीधिंन
 भेजाई ५ म्रथकायुवाईकों डो.
 सुहिरेरंडनाईमैनदेवदारुसुगिलाई॥

काप्य सुभीजे प्रातः उठना तपीडन हि
 होई अथ हा धुविम गर्जिते तन राई कै
 चौ। मीठा तेह से मुई कप्रांन। तुल्य
 धतूरे कने गभिलं न गुंजा विषु सुध
 तूने बीज टक सुपंच पंच सो हूजे ॥ १५ ॥
 विध सुते लकी जीये आंन। लघु वि
 सगर्जते लय ई जानु। मर्दन की जै
 देही लाई वात चौ रासी जाप राई ॥ १६ ॥
 अथ जाई अकउ कौ औषद ॥ सो

आच्छातसूतनकुटिषीनकवोगोदुगधसो
 नाईसीतहडफुटनासेआकडजंगको १३
 अप्यनपांइशंगगगुगलसर्वनाईकोकदि
 संग्रहातु दो. मालकुंगनीप्रामनांअ
 मगंधसुठगीतोई त्रिकीनषुडासोम
 हडसुठिसितावरसोई १४ अजवाई
 नममपीसकेसमसमगुगलपाई
 अर्धनागगोधीवसोटंरुदोईलेषा
 ई कपग्रहिरीघनयोदुषुबुबुज

कुखग्रहिवाई नाडीजानूपादकेरेते
 रोगनसाई १६ प्रथपितकोप्रतीकानु॥
 चौ॥ इहाम्चीरूपरुसीरठान आचरे
 सुचदतुल्यज्ञान ऐपीसजुपीजहुज
 लानिलाई सोपतकोपछिनमहिलेई ॥५॥
 दहित्रिधाकोलेपु दो वेरीपलवत्रा
 नरेतंदुलछिडिसुरलाई जलसोले
 पहुचवनजुगुदाघटथानरहाई
 १५ प्रथछरदुवाकीकोचूर्नःदो॥

सनसभजानगुटका कीजिटंकदैः
 बैरकायसों देई प्रथनापचातुतसज
 ल सुं डी काय करे प्रातसमै तिहृततधि
 नै २७ गंडमा तव एकुष अयची गोहा
 ग्रथमादि मोहन उगीदर दुष्ट अर्षदना
 सैसससुन २८ अथ मुखपकेनं अर्ष
 द दे - तोबाजी रईलाची सोकथुनका
 ई मुखमै मेले पीसके रदन पाकन
 नरई २९ अथ रुदात को डोषदः ॥

दो॥ ससवासेको मस्तमितमयपुहसु
 दो॥ नो॥ सोई प्रातरुचाटहुमातदिनदंत
 कको॥ षोई २॥ अथदंतकीटवक्तप्रवाह
 को॥ षोई दो॥ कासंभो॥ यावद्युमिति
 कं॥ कुठपुनंजान॥ होचमंजीठमिल
 हिकेपीसोसामकन॥ ग्रान॥ २१ उषधि
 सप्तसप्तपीसकेमुखमैमर्दो॥ ग्रान॥ ॥
 पीडाकीटप्रवाहुदुष्टनिमेषवीचस
 जहान॥ अथउषधमुखपकेके॥ ॥

त्रिफलादायि होई पुन पत्रवनेलीपा
 ई कुरलीकीजै नीरसों वदनपाकन
 रहाई ३४ अथकीलकाछौषध दो.
 मरसों सेंघालो घृवचये डौषधसम
 ठंज जलसौ वदनजुले पीये नासकी
 लकान्न ३५ अथ डौषध घाईको
 दो. मकरकरा मरु मरुचसित मरुद
 संघसमाच बहेउ सो जव ले पीये
 घघाईकीहान ३६ अथ मुष घाई
 कोलेप दो. चलीरातिलस्यामपुनः

जीरा सन सों पीस पय मौल पुज जे
 न कै सुष घाई नहि दीस ॥ ३७ ॥ होन ह
 रिकु ठहो ध मुन ए ठो ब धि स म नाई
 मि व स स मौ ले पी ये सुष की घाई जा ॥ ३८ ॥
 अना स का नो ग प्रती का न दे ॥ दुर्व क
 सु न ह की त की दा उ म फ ल व हाई सी
 त नी र सों ना स दै र क ज ग म न मो ल
 ई ॥ ३९ ॥ अ च ठो ब ध पी न स खे ह रि
 सी स न्न को दे ॥ सु ठि म न च ॥

दुपिषने गुजसौ दीजे आन पीमखेट
 दसीम दुखनाम ईन्है को जान ४०
 अथपि जस को डोष छ दो अवलम्ब
 अरहहि परमि अतति दे मेह नाले
 राजवनी दसौ पीउपीसने नेह ४१
 अथनेत्र रोग प्रतीका नु ॥ अथ वति
 लौं नहरीत की गोरे हर किलोई जल
 मो वपर लेखिये ने की पीर मिछाई
 ४२ अथ जनेत्र रोग का कातक फल

अरु जस्त पन महि दीर स से योगे लो
 चन अरु जनी जी ये हे नैन को रोग ॥ ४४ ॥
 अरु जतरात्र अंध को दे. सुरमा रजन
 सुगम नहि जीती रस सुत बंध नयन
 अरु जनु की जी ये हे नैन लानि स अंध ॥ ४५ ॥
 अरु पन अरु अंध के अरु जन दे सावन
 ये अरु बाला को तिल ईक अरु जन ये ई
 निम अंधा बहु दिन न के तिल ईक अरु
 मूल ही ना सकरे तु ई ई अंध यउ ॥

लकोअंअनु मेधाअनुकदिलेकौकं
 सयालुमैपाई कसरगडाअंअनुकनेने
 जपीअंअनुमिटाई पुनःरगडाई दो. रस
 वतसुधसुफटकडीनारीदुगाधमिल्लाई॥
 कंसयालुनगडाईयेनेत्रपीउमिटजाई॥५॥
 अथअंअनसचलवाईको. दो. पादा
 जनुसंगीसरीमोताभाएकजानु. ये
 छोटंकईहिलीजीयेईनकाईहपरसं
 नु. ५. दो. छिठदंतसुखाकसूनहोई

हृमिल्लाई अयत्रयकंठप्रभंनधरकं
 सपात्रमेघाई ५२ चेहीययसोपीर
 कैद्रिगंजुनसुकरेहु ॥ सरहवाईकै
 वसहेदुधनातापथदेई ५३ अथसब
 लवाईकोंरगडा दे भतांतवअरु
 जसुपुननीहराचोयात्रान सीपीच
 नाफटकीसीसकिदयेनसभंन ५३
 कंसयालमेवगडीयेचलगोकासुभि
 लाई निसासुअंजमकीछीयेसकल

नाई नरहाई ५४ अथ पोटीनेत्रपीड
 की दो जीनाकाहीफटकडीत्रिफलासे
 एसाई रसवतहलोहरदपुनहोद्यहप
 मभिलाई ५५ दो ऐओषदिसमम्रान
 केकोपोटलीपीमः सर्वपीडकोनम
 हैनईकोनेरमदपीस ५६ अथमंज
 नतिमरफोलेकावाईक सुरमोसेंध
 सुंखपुनमनसलित्रिकुटाग्रान क
 तिकफलुअनुमिशरीसागरकेनममंजना५७

अंजन घे ली दुगध भौति भर रोग नर
होई ॥ फोला खोरा वाई फुन नयन पी
नलु भिटाई ५८ अथ नर रोग प्रतीक
तु ॥ दो रे कल वी जति लपत्र रस कं
नीच जे पाई बहरा पीरा पूव दुख येते
रोग नमाई ॥ औषध कान रोग के दो
अ कपात भै लसन घदि पूव मूल नं ही
ई ॥ ऐसा अंजनु जो करे बहुर पीर न हो
होई ॥ अथ नर रोग के औषध दो

देवदारुचसुंठपुनमेंधात्रौ फलहा
 ई अजामृतसोतप्तकरकंजदध्यासु
 मिट्टई ६१ अथ सिरदोगप्रतीकारः
 राईफिरवर्तिकांलेप दो देवदारुकुठ
 कंजफल ऐरंडतेलमिलाई कंजीमें
 जरलेप कविनातसिरोवर्तिजई ६१
 अथ कफसिरवर्तिकांलेप चौ ऐरंडि
 राईमैनकुठजग्न छउवचकुठविघ
 राअन तपतनीरसौपीसोलाई॥
 कफसिरवर्तततछिनमैजाई ६३ अथ

कंपतिमिरवर्तकोलेपु चंदनश्रीना
 कसेनदुर्लभाजुआवने कचचरीजले
 वेरावितसिरोवर्तनासहे अप्यहेपसि
 वेवर्तसिरोवर्तकोलेपु कुठमरचक्र
 कोईफलुऐनउकीजहिघाल तपतनी
 रस्योलेपीयेसेसिरवर्तदाल ॥६५॥
 पलेपसिरवर्तको दो पीपरमरचह
 रीतकीऐनीनोसमजाई काजीसेती
 लेपकरिपीजसिरकीजाई ॥६६॥